الٓمٓ ﴿١﴾ ٱللَّهُ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡحَيُّ ٱلۡقَيُّومُ ﴿٢﴾ نَزَّلَ عَلَيۡكَ
ٱلۡكِتَٰبَ بِٱلۡحَقِّ مُصَدِّقٗا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ وَأَنزَلَ ٱلتَّوۡرَىٰةَ
وَٱلۡإِنجِيلَ ﴿٣﴾ مِن قَبۡلُ هُدٗى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ ٱلۡفُرۡقَانَۗ إِنَّ
ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ لَهُمۡ عَذَابٞ شَدِيدٞۗ وَٱللَّهُ عَزِيزٞ
ذُو ٱنتِقَامٍ ﴿٤﴾ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَخۡفَىٰ عَلَيۡهِ شَيۡءٞ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَلَا فِي
ٱلسَّمَآءِ ﴿٥﴾ هُوَ ٱلَّذِي يُصَوِّرُكُمۡ فِي ٱلۡأَرۡحَامِ كَيۡفَ يَشَآءُۚ لَآ
إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ ﴿٦﴾ هُوَ ٱلَّذِيٓ أَنزَلَ عَلَيۡكَ
ٱلۡكِتَٰبَ مِنۡهُ ءَايَٰتٞ مُّحۡكَمَٰتٌ هُنَّ أُمُّ ٱلۡكِتَٰبِ وَأُخَرُ
مُتَشَٰبِهَٰتٞۖ فَأَمَّا ٱلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمۡ زَيۡغٞ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَٰبَهَ
مِنۡهُ ٱبۡتِغَآءَ ٱلۡفِتۡنَةِ وَٱبۡتِغَآءَ تَأۡوِيلِهِۦۖ وَمَا يَعۡلَمُ تَأۡوِيلَهُۥٓ إِلَّا
ٱللَّهُۗ وَٱلرَّٰسِخُونَ فِي ٱلۡعِلۡمِ يَقُولُونَ ءَامَنَّا بِهِۦ كُلّٞ مِّنۡ عِندِ
رَبِّنَاۗ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُوْلُواْ ٱلۡأَلۡبَٰبِ ﴿٧﴾ رَبَّنَا لَا تُزِغۡ قُلُوبَنَا
بَعۡدَ إِذۡ هَدَيۡتَنَا وَهَبۡ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحۡمَةًۚ إِنَّكَ أَنتَ
ٱلۡوَهَّابُ ﴿٨﴾ رَبَّنَآ إِنَّكَ جَامِعُ ٱلنَّاسِ لِيَوۡمٖ لَّا رَيۡبَ فِيهِۚ إِنَّ
ٱللَّهَ لَا يُخۡلِفُ ٱلۡمِيعَادَ ﴿٩﴾

Theme	
It is Allah Who has revealed Torah, Gospel and Qur'an. Qur'an's decisive vs. allegorical verses. Supplication of the believers to remain steadfast	अल्लाह ही है जिस ने तौरेत, इंजील और क़ुरआन नाज़िल फ़रमाए। क़ुरआन की मुहकम और मुतशाबेह आयात। ईमान पर साबित-क़दम

upon belief.	रहने के लिए अहल-ए-ईमान की दुआ।
Tarjumani	
Alif Lam Meem. Allah! There is no god but He; the Living, the Eternal. He has revealed to you this Book with the Truth, confirming the scripture which preceded it, as He revealed the Tawrat (Torah) and Injeel (Gospel), before this, as a guidance for mankind and also revealed this Al-Furqan (criterion for judgment be-tween right and wrong). Surely, those who reject Allah's revelations will be sternly punished; Allah is Mighty, capable of retribution. Surely, nothing in the earth or in the heaven is hidden from Allah. It is He Who shapes you in the wombs of your mothers as He pleases. There is no god but He; the Mighty, the Wise. He is the One Who has revealed to you the Book. Some of its verses are decisive - they are the foundation of the Book while others are unspecific.	अलिफ़-लाम-मीम | अल्लाह, वह ज़िन्दा-ए-जावेद हस्ती जो निज़ामे-कायनात को संभाले हुए है, हकीक़त में उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है | ऐ नबी, उसने तुमपर यह किताब नाज़िल की, जो हक़ लेकर आई है और उन किताबों की तस्दीक कर रही है जो पहले से आई थीं | इससे पहले वह इनसानों की हिदायत के लिए तौरात और इंजील नाज़िल कर चुका है, और उसने वह कसौटी उतारी है (जो हक़ और बालित का फर्क़ दिखनेवाली है) | अब जो लोग अल्लाह के फ़रामीन को क़बूल करने से इनकार करें उनको यकीनन सख्त सज़ा मिलेगी | अल्लाह बेपनाह ताक़त का मालिक है और बुराई का बदला देनेवाला है | ज़मीन और आसमान की कोई चीज़ अल्लाह से पोशीदा नहीं | वही तो है जो तुम्हारी माओं के पेट में तुम्हारी सूरतें जैसी चाहत है, बनाता है उस ज़बरदस्त हिकमतवाले के सिवा कोई और ख़ुदा नहीं है | ऐ नबी, वही ख़ुदा है जिसने यह किताब तुमपर नाज़िल की है | इस किताब में

Those, in whose hearts is perversity, follow the unspecific part, seeking discord thro-ugh giving it their own interpretation, but no one knows its true interpretation except Allah. Those who are well grounded in knowledge say: "We believe in it; it is all from our Rabb." None will take heed except the people of understanding. They say: "Our Rabb, do not let our hearts deviate from the truth after you have guided us, and grant us Your own mercy; You are the Grantor of bounties without measure, Our Rabb, You will surely gather all mankind before You on the Day about which there is no doubt, surely, Allah does not break His promise."	दो तरह की आयात हैं : एक मुहकमात, जो किताब की अस्ल बुनियाद हैं और दूसरी मुतशाबिहात। जिन लोगों के दिलों में टेढ़ है, वे फितने की तलाश में हमेशा मुतशाबिहात ही के पीछे पड़े रहते हैं और उनको मानी पहनाने की कोशिश किया करते हैं, हालाँकि उनका हकीकी मफहुम अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। बखिलाफ़ इसके जो लोगो इल्म में पुख्ताकार हैं, वे कहते हैं कि "हमारा इनपर ईमान है, ये सब हमारे रब ही की तरफ़ से हैं।" और सच यह है कि किसी चीज़ से सही सबक़ सिर्फ़ दानिशमन्द लोग ही हासिल करते हैं। वे अल्लाह से दुआ करते रहते हैं कि "परवरदिगार, जब तू हमें सीधे रस्ते पर लगा चुका है तो फिर कहीं हमारे दिलों को कज़ी में मुब्तला न कर दीजिये। हमें अपने खज़ानए-फैज़ से रहमत अता कर कि तू ही फैयाज़े-हकीकी है। परवरदिगार, तू यकीनन सब लोगों को एक रोज़ जमा करनेवाला है, जिसके आने में कोई शुब्हा नहीं है। तू हरगिज़ अपने वादे से टलनेवाला नहीं है।"
Tafsir	